thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 36 02 से 08 अक्टूबर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 आ. शु. 08

सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के 75वें जन्म दिवस के अवसर पर 'सर्वधर्म संसद' के बैनर तले माँस निर्यात के विरुद्ध जन्तर-मन्तर पर आयोजित हुआ विशाल धरना

स्वामी अग्निवेश जी ने की सिंह गर्जना

गो-हत्या पर लगे पूर्ण रोक तथा बूचड़खाने अविलम्ब बन्द किये जायें

नई दिल्ली : 21 सितम्बर, 2014, क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के 75वें जन्म दिवस एवं विश्व शांति दविस के अवसर पर आज सर्वधर्म संसद के बैनर तले एक विशल धरने का आयोजन हुआ। धरने में स्वामी अग्निवेश जी एवं अन्य वक्ताओं ने मांस उद्योग पर जोरदार हमला बोला। धरने को सम्बोधित करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि जब तक पिंक रेवोल्यूशन को पोषित करने के लिए भारतवर्ष में बूचड़खाने चलते रहेंगे एवं जब तक पशुओं विशेषकर गायों के बध पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लग जाता वे चैन से नहीं बैठेंगे। धरने में निम्न तीन मांगों पर विशेष

वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली को ज्ञापन सौंपते हुए स्वामी अग्निवेश जी, सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य, बहन गायत्री मीना, श्री विवेकमुनि, मोहम्मद फिरोज खॉन, बहन प्रवेश आर्या तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति

जोर दिया गया। उसके पश्चात् इन्हीं मांगों को लेकर एक ज्ञापन भी भारत सरकार को दिया गया। गोहत्या पर पूरे देश में पूर्ण रोक एवं सारे

सर्व धर्म संसद
Sarva Dharma Sansad

7, Jantar Mantar Road, New Delhi-110001 (INDIA), Ph.: 011-23363221, 23367943, Fax : 23367946
Website : sarvadharmasansad.com
E-mail : sarvadharmasansad@gmail.com, contact@sarvadharmasansad.com

ज्ञापन

21 सितम्बर, 2014

श्री नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

केन्द्रीय वित्त एवं प्रतिरक्षा मंत्री श्री अरुण जेटली जी के माध्यम से

आपने गुजरात में पिछले साल व्यापारी वर्ग को सम्बोधित करते हुए भारत के सबसे बड़े मांस निर्यातक होने पर एवं 'पिंक रेवोल्यूशन' पर कुठाराघात करते हुए कहा था"....ये कैसी बातों पर गर्व किया जा रहा है। मित्रों मुझे समझ नहीं आता कि भारत विश्व का सबसे बड़ा मांस निर्यातक बन गया है और आप सब चुप हैं।" हमें आपके इस उद्बोधन से अपार शक्ति मिली थी। भारत जो वेद-उपनिषद् को देश है, जो कृष्ण, महावीर, दयानंद, गांधी की भूमि है उस पर पशुओं की इस नृशंसता से हत्या हो तो यह हमारी संस्कृति के साथ बलात्कार करने के समान है। आशा है कि आप उसी भावना से जो आपके सम्बोधनों में हमें चुनाव से पहले दिखी थी और गांधी जी ने जो मंत्र दिया था कि 'किसी देश की महानता और उसकी नैतिक उन्नति का आकलन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वहां पशुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।" इन को मूल में रखते हुए जल्द ही मांस की संस्कृति के समूल नाश के लिए एक 'एक्शन प्लान' बनवाएगें। इसी सम्बन्ध में सर्व धर्म संसद से हम सब धर्माचार्य आपसे मांग करते हैं कि-

1. गोहत्या पर पूरे देश में पूर्ण रोक एवं सारे बूचड़खाने तुरन्त बंद हों।
2. मांस निर्यात पर पूर्णतः रोक।
3. धर्म के नाम पर हो रही गैरकानूनी पशु हत्या तुरन्त बंद हो।

(स्वामी अग्निवेश) संस्थापक संयोजक
(शिव मुनि) जैन समाज
(मुनि लोकेश) जैन समाज
(गोस्वामी सुशील महाराज) भृगु फाउन्डेशन
(स्वामी चक्रपाणि) सन्त सभा
(स्वामी आर्यवेश) प्रधान-आर्य समाज
(प्रो० अमिता सिंह) जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
(फिरोज खान) प्रबंधक-मदरसा मौलाना मोहम्मद अली जौहर
(मुनि विवेक) जैन समाज
(डा० अनिल आर्य) आर्य समाज
(स्वामी श्रद्धानंद) आर्य समाज

स्वामी अग्निवेश जी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी स्वामी दयानन्द जी का चित्र भेंट करके बधाई देते हुए साथ में खड़े, सर्वश्री महेन्द्र भाई, स्वामी चक्रपाणि, डॉ. अनिल आर्य तथा रामकुमार

बूचड़खाने तुरन्त बंद हों, मांस निर्यात पर पूर्णतः रोक। धर्म के नाम पर हो रही गैरकानूनी पशु हत्या तुरन्त बन्द हो। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, जैन धर्म से लोकेश मुनि एवं विवेक मुनि, रविन्द्र मुनि, संत महासभा के अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणी, मदरसा मौलाना मोहम्मद अली जौहर के प्रबंधक फिरोज खान, सम्भल (उ. प्र.), गुरुद्वारा बंगला साहब के अध्यक्ष परमजीत सिंह चण्ढोक, भृगु फाउन्डेशन के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील महाराज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से प्रो. अमिता सिंह ने भी अपने सम्भाषणों द्वारा धरने की मांगों का समर्थन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मानवीय संगीत श्री पुष्किन अरोड़ा तथा सुश्री मीनाक्षी ने किया तथा मंच संचालन श्री मनु सिंह ने किया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

29वीं पूण्य तिथि 8 अक्टूबर, 2014 पर विशेष

युवा हृदय सम्राट, क्रांतिकारी, सामाजिक क्रांति के प्रेरक कर्मयोगी मदन सिंह आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैचारिक क्रान्ति के योद्धा, आर्य समाज और आर्य वीर दल के सिपाही, महान् देशभक्त, सामाजिक क्रान्ति के उद्‌बोधक, युवकों के हृदय में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के मजबूत इरादों का बीजारोपण करने वाले कर्मयोगी श्री मदनसिंह आर्य अपने अल्प जीवनकाल में इतना बृहद्ध कार्य करके चले गये कि युगों–युगों तक उनका नाम इतिहास के पन्नों में याद किया जाता रहेगा और आने वाली युवा पीढ़ियां उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर देश के लिए समर्पित होने के लिए संकल्पबद्ध होती रहेगी।

उनका जन्म 25 अक्टूबर, 1931 को जोधपुर में ही हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जोधपुर शहर में ही श्री उम्मेद हाई स्कूल में हुयी। स्कूली शिक्षा के साथ–साथ उनके जीवन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता चला गया। देशभक्त क्रान्तिकारियों के साथ रह कर वे भी 1947 की आजादी के असली हकदार बन गये। आर्य समाजों के कार्यक्रमों और आर्यवीर दल के शिविरों में सक्रिय भाग लेते थे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिये उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से राजस्थान प्रान्त में, जोधपुर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, पीपाड़, आदि अनेकानेक स्थानों पर क्रान्ति एवं बगावत की ज्योति प्रज्ज्वलित की।

20 अप्रैल 1951 में भारतीय सेना में चले गये उन्होंने गोवा मूवमेन्ट की अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। अपनी बटालियन के द्वारा उन्होंने फ्रान्सिसियों को गोवा के किले के अन्दर सुरा–सुन्दरियों के साथ नग्न अवस्था में रंगरेलियाँ मनाते गिरफ्तार कर बंदी बनाया।

1962 में भारत–चीन युद्ध, 1965 में भारत–पाक लड़ाई और 1971 में फिर भारत–पाक युद्ध में सच्चे भारतीय सैनिक के रुप में भाग लिया। परिणामस्वरुप उन्हें अपनी योग्यता के आधार पर पदोन्नत कर रिसालदार बनाया गया। उन्होंने हाइयेस्ट मिलिट्री एज्युकेशन सर्टिफिकेट हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये। उनको पाकिस्तान की 1965 के लड़ाई में भारतीय सेना में रक्षा मेडल एवं समर सेवा स्टार से सम्मानित किया। उनकी इन उपलब्धियों से पता चलता है कि श्री मदनसिंह आर्य शारीरिक एवं मानसिक रुप से पूर्ण परिपक्व थे। 25 मई, 1972 में उन्होंने सेना से डिस्चार्ज ले लिया। इस समय में आर्मड कौर में रिसालदार मेजर थे।

परिश्रम एवं योग्यता के आधार पर मदनसिंह आर्य सेना में जल्दी ही जूनियर कमीशन ऑफिसर बन गए। उन्हें खेलकूद का बहुत शौक था। सर्विसेज बॉक्सिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

जब–जब सेना से छुट्टियों पर आते वे अपना संपूर्ण समय आर्य वीर दल के माध्यम से पूरे राजस्थान प्रांत में दौरे करते और युवको के चरित्र निर्माण, योगाभ्यास, जिम्नास्टिक, बॉक्सिंग, मलखंभ, सैनिक शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा आदि की शिक्षा का प्रचार व प्रसार करते।

श्री मदनसिंह आर्य के पास चरित्र रुपी महान खजाना था जिन महान् कार्यों के लिये उनका जन्म हुवा वास्तव में राष्ट्र को उनके कार्यों की आवश्यकता थी। उनका संपूर्ण जीवन नौजवानों को संगठित कर अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना से देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा के लिये साम्प्रदायिक सद्‌भावना बनाने के लिये लगा रखा। उनका कहना था कि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषमता को दूर करने के लिये सबसे पहले नौजवानों को क्रांतिकारी कदम उठाना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का चरित्र निर्माण हो सके। उनका सारा जीवन सादा और उच्च विचारों व कर्म से ओत–प्रोत एवं संघर्ष–साधना का प्रतिरुप रहा।

मदनसिंह आर्य सौम्य विद्रोही थे, उनका जीवन कर्मठता, साधना और संभावनाओं से भरपूर था। उन्होंने 40 वर्ष तक राष्ट्र व समाज की एक समाज सुधारक की भांति निस्वार्थ भावना से सेवा की। वे महर्षि दयानंद के वैचारिक आंदोलन के भागीदार आर्य समाजी थे। युवकों में अपनी कार्य पद्धति, तर्क शक्ति और वैज्ञानिक व्याख्या से अमिट छाप छोड़ते थे।

वे जहां भी जाते मूर्ति पूजा, सतीप्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, अंधविश्वास, पाखण्ड, छुआछुत, जातिवाद और धार्मिक अंधता का स्पष्ट एवं कठोर शब्दों में तीव्र आलोचना करते एवं खुले शास्त्रार्थ की चुनौती देते। उन्होंने कहा कि कुप्रथाएं हमारे राष्ट्र की नैतिकता को विश्व भर में कलंकित करती है। अतः युवकों को संगठित होकर इन जड़वादी नीतियों के विरुद्ध एवं अज्ञान, अन्याय और अभाव के खिलाफ आंदोलन करना चाहिये, ताकि एक विशुद्ध नये समाज की संरचना हो सके। मदनसिंह प्रथम समाज में श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण और द्वितीय समाज को जागृत करना चाहते थे।

सर्वप्रथम 1972 में राजस्थान में प्रांतीय जिम्नास्टिक संघ की स्थापना स्वयं के कर कमलों द्वारा

स्व. मदनसिंह आर्य

और प्रांत के संघ को सचिव पद को भी सुशोभित किया। तत्पश्चात् लंबे संघर्ष से प्रांतीय स्तर का 1984–85 में मुक्केबाजी (बॉक्सिंग) संघ की नीव भी आप द्वारा लगायी गयी।

आपके द्वारा प्रशिक्षित कई युवक राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त किये। कई वर्षों तक राजस्थान के आर्य वीर दल के अधिष्ठाता पद पर कार्य करके राष्ट्रीय स्तर के आर्य वीर दल शिविरों में बौद्धिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण दिया। वे आर्य समाज के कई वर्षों तक मंत्री रहे। महर्षि दयानंद स्मृति भवन जिसमें महर्षि को जहर दिया गया था एवं जो 1973 में राज्य सरकार द्वारा आर्य समाज को प्राप्त हुआ उस भवन को मदनसिंह आर्य ने आर्य युवकों का प्रेरणा स्थल बनाया।

मदनसिंह आर्य अपने अल्प जीवन काल में पूरे आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव की ज्योति हजारों युवकों में जलाकर चले गये। उनकी ओजस्वी भाषा, बौद्धिक व्याख्यान व तर्कसंगत वैज्ञानिक विचार पद्धति ने विशेषकर नवयुवकों को आकृष्ट किया। वे जहां भी जाते, उठते–बैठते नौजवानों का काफिला उनके साथ लगा रहता।

मदनसिंह आर्य का जीवन सफल जीवन था, क्योंकि उनका समस्त जीवन मानव कल्याण व मुख्य रुप से नौजवानों के उत्थान में लगा रहा। इस भौतिक जगत में वे देव ऋण से मुक्त हो गये। इससे महान् मूल्य किसी इंसान के जीवन का और हो भी क्या सकता है?

महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर मदनसिंह आर्य याने हमारे प्रिय "मदन भाईसा" ने आर्यवीर दल नामक संगठन के माध्यम से एक क्रांति का सूत्रपात किया था। उनके पुरुषार्थ से आर्य समाज में नई चेतना आई। आर्य समाज की यज्ञाग्नि को ठंडा करने वाले षड़यंत्रकारियों से संगठन को मुक्ति मिली तथा आर्य समाज में नये रक्त का संचार हुआ परिणामतः समाज के तीन शत्रु अज्ञान, अन्याय एवं अभाव के विरुद्ध संघर्ष का जोरदार सूत्रपात हुआ।

भारतीय दर्शन के अनुसार मदनसिंह आर्य अपने पूर्वजन्म के संस्कार व तत्कालीन जीवन के पुनीत कर्मो से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के पुरुष थे। उस पुण्यात्मा ने हजारों–हजारों युवकों को पुण्य कमाकर दियें। अपने जीवन की आखिरी यात्रा में वे नागरिक सुरक्षा (सिविल डिफेंस) में सी.डी.आई. के पद पर जोधपुर में कार्यरत रहे। उन्हीं दिनों में माउंट आबू पर एन.सी.सी. के कैडेट्स को सुरक्षा के मर्म को बताते हुये अपने पंच भौतिक तत्वों से बने शरीर को 8 अक्टूबर 1985 को सांय 06:45 बजे छोड़ दिया।

आर्य जगत का महान् पुरुष, आचार्य, महर्षि दयानंद का अनन्य भक्त भारत माता के सपूत को ईश्वर ने हमारे बीच से हमेशा के लिये उठा लिया। 25 अक्टूबर 2014 को स्वर्गीय मदनसिंह आर्य की 83वीं जन्मतिथि पर हजारों आर्यवीर युवकों द्वारा श्रध्दाजंली अर्पित करने के साथ–साथ उनके कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेंगे, ताकि आने वाली पीढ़ी को वे भी एक प्रेरणा के स्त्रोत बन सकें।

उनका उद्‌बोधन

"आर्य वीर दल" स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य–संस्कृति के आधार पर युवकों में चरित्र–निर्माण करता हैं उनमें राष्ट्रीय, विश्व–बंधुत्व एवं कृण्वंतों विश्वमार्यम् का संचार करता है। मनुष्यों में मानवीय गुणों को पल्लवित करता है। समय–प्रवाह के साथ–साथ समाज में उत्पन्न अंधविश्वास, रुढ़िवादिता, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, दास–प्रथा, अस्पृश्यता, नारी–उत्पीड़न जैसी कुरीतियों को नेस्तनाबूद कर समाज में पुनः वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं कल्याणकारी परम्पराओं का निर्वाह कराना "आर्य वीर दल" का प्रमुख लक्ष्य है। इस कार्य हेतु शारीरिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास के पथ–प्रशस्त करता है। महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने एवं सौम्य समाज की रचना के लिये संघर्षरत रहा है। अतः अधिक से अधिक संख्या में "आर्य वीर दल" की विचारधारा से जुड़ना चाहिये।

विनित

(नारायणसिंह आर्य)

पूर्व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा

राजस्थान

गज़ल

जिनकी ग़ज़लों से जाग जाए क्रांति ऐसे ग़ज़लकारों का देश हो,
प्रेम, भाईचारा, अमन फैले घर–घर में ऐसा सुन्दर परिवेश हो।
ना कोई हिन्दु रहे, ना मुसलमान रहे, ना सिख ना ईसाई,
हर डोलते हर दिखते चेहरें में मुनष्य का भेश हो।
लाठी हो अंहिसा की, सत्य का ऐनक हो स्वदेशी का प्रचार हो
दिखे हर इंसान में गांधी, दयानंद से दरवेश हो।
पढ़े सत्यार्थ प्रकाश को सत्यधर्म का प्रचार हो,
ना अन्धविश्वास का शनि देव हो, ना राशियाँ कुम्भ, मीन, मेष हो।
कुरान, बाइबल, वेदों, उपनिषदों का अध्यन एक साथ हो,
चले सब सत्य के मार्ग पर ना झूट का अंश मात्र लेश हो।
ना दंगे हो गोधरा जैसे, ना मुजफ्फर नगर जैसी हिंसा हो,
जो मिटाएं दूरीयां दिलों की ऐसे संन्यासी स्वामी अग्निवेश हों।
साधु हो सिद्धता देने वाले, ज्ञानी–ज्ञान दायक समाज में,
ऐसे साधुओं की ज़रूरत नहीं जिनपे बलात्कारों के केस हों।

श्री हंस राज आर्य
दमदमा गांव, सोहना रोड, हरियाणा
मो. 09813613075

thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा : मूल में भूल

...गतांक से आगे

–डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

प्रकृति का स्वरूप

ईश्वर और आत्मा के पश्चात् तीसरा अनादि पदार्थ प्रकृति है जो इस सृष्टि का उपादान कारण है। अत्यंत सूक्ष्म परमाणुओं की साम्यवस्था का नाम प्रकृति है। ये परमाणु तीन प्रकार के हैं जो सत्व गुण, रजो गुण और तमो गुण हैं। प्रकृति से महतत्त्व, महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्राएँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन, पाँच तन्मात्राओं से पांच स्थूल भूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश उत्पन्न होते हैं। प्रकृति के महतत्त्व से लेकर पृथ्वी पर्यन्त तेईस विकार हैं जिनके परस्पर संघात से जगत् बनता है। पाँच स्थूल भूतों के संयोग से, प्रभु की कृपा और व्यवस्था से मनुष्य, पशु-पक्षी आदि प्राणधारी शरीरों की रचना तथा सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, नक्षत्रादि जड़ पदार्थों की रचना होती है। ये परमाणु जड़ हैं, अनादि और अनन्त हैं जिनको जोड़कर ईश्वर सृष्टि की रचना करता है। इन पंच भूतों का हमारी आत्मा पर, संस्कारों पर, हमारे अन्तःकरण (मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त) पर प्रभाव पड़ता है जिन्हें धोने के लिए अष्टांग योग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का आश्रय लेना पड़ता है। अष्टांग योग न भी अपनाया जाये तो भी एक साधक को, अराधक को, भक्त को कम से कम पांच यमों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) तथा पांच नियमों (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-शरणागति) का पालन तो अपने जीवन में करना ही पड़ता है जिससे वर्तमान तथा पूर्व जन्म के बुरे संस्कारों का प्रभाव, परिवेश, भोजन, सहवास आदि के कुप्रभावों से अन्तःकरण को, आत्मा को स्वच्छ रखा जा सके। ये पाप मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, गंगा स्नान आदि से दूर नहीं हो सकते, सात्विक जीवन जीने से, सद्गुरुओं के सान्निध्य से, सत्संग से दूर होंगे। तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान की साधना क्रिया योग कहलाती है - यह आराधना का प्रशस्त मार्ग माना जाता है। कोई भी गुरु, संत, महात्मा हमें सद्प्रेरणा, उत्साह, सामर्थ्य, मार्गदर्शन दे सकता है लेकिन अपनी यात्रा हमें अपने ही पैरों से पूरी करनी होती है। गुरु न तो हमारे पाप धो सकता है, न मुक्ति दिला सकता है, न कर्मफल से छुटकारा दिला सकता है, न परमात्मा से हमारी सिफारिश करके हमें हमारे पापों की मार से बचा सकता है जैसा कि मुहम्मद साहब और ईसा-मसीह को दावा करते दिखाया गया है। भारतीय दर्शन की कर्मफल व्यवस्था और पुनर्जन्म को ये मसीहा नहीं जानते मानते थे जो कि वैदिक ऋषियों की, योगिराजों की, दार्शनिकों की, वेद मनीषियों की व्यवस्था है अतः उनके दावे विश्वसनीय नहीं भेड़ें बटोरने के टोटके थे। आज भी अनेक गुरु घंटाल ऐसे दावे करते व चेले-चेली मूंढ़ते देखे जा सकते हैं लेकिन उनका स्वयं का हाल क्या रहा रजनीश, बापू आसाराम, आशुतोष महाराज के प्रसंग स्मरण कर जाने जा सकते हैं। अपने को ब्रह्मा या अवतार घोषित करने वाले और चमत्कार दिखाने वालों की सम्पत्ति को लेकर शिष्य मण्डली में कितना घमासान मचता है यह भी प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। भला ब्रह्म का अकूत भौतिक सम्पदा इक्ट्ठा करना कौन सा अध्यात्म है?जो पूरी सृष्टि का मालिक है वह हीरे जवाहरातों की, धन सम्पदा की, कोठी बंगलों की इच्छा रखेगा, चेलियों को वासना तृप्ति का साधन बनायेगा, वशीकरण-अभिचार मारन-उच्चाटन में विश्वास रखेगा, काले धन को सफेद बनाने में प्रयासरत होगा?ये सब बुराइयाँ साकारवाद में, अवतारवाद में, गुरुडम में, चमत्कारों में विश्वास, आस्था, श्रद्धा रखने के स्वाभाविक परिणाम हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक जगत् आज इन बुराइयों से अटा पड़ा है जिनमें मूर्तिपूजा सबसे घातक है। मूर्तिपूजा के एक नहीं बीसियों दोष हैं जिनका उल्लेख महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश में सविस्तार किया है। पराधीनता का लम्बा दौर जो भारत को झेलना पड़ा उसका एक बड़ा कारण मूर्तिपूजा थी। मूर्तिपूजा ने धर्म व अध्यात्म को बाजारवादी संस्कृति का अंग बना दिया है। मूर्तिपूजा अवैदिक होने से पाखण्ड और अंधविश्वास की जननी है। इसने शार्ट कट रूट तैयार करके साधना, अराधना, सात्विक जीवन शैली के परम्परागत मार्ग अवरुद्ध कर दिये हैं। इसके कारण परमपिता परमात्मा के प्रति लोगों की श्रद्धा, विश्वास, आस्था कम हो रही है। इसके कारण गुरुडम के फलने-फूलने की सम्भावनाएं बढ़ती जा रही हैं। मूर्तिपूजा भीड़-तन्त्र को बढ़ावा दे रही है जिससे सामाजिक स्तर पर, साम्प्रदायिक स्तर पर, आर्थिक स्तर पर, राजनैतिक स्तर पर घातक ध्रुवीकरण हो रहा है। वेद, उपनिषद्, दर्शनों के कारण भारत की जो सांस्कृतिक छवि बनी थी और वह विश्व गुरु के पद पर सम्मानित व प्रतिष्ठित हुआ था उस दिव्य छवि को मूर्तिपूजा धूमिल कर रही है। वैदिक परम्परा के प्रति अविश्वास, उपेक्षा, अवमानना के भाव पैदा कर रही है। ये ऐसे खतरनाक और हानिकारक खतरे हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इस ओर जो भी कदम उठाता है उसे आडम्बरी लोग मिलकर पीछे धकेल देते हैं। कारण हिन्दुओं में साकारवादियों की संख्या अधिक व निराकारवादियों की कम है। अब यह अन्तर और अधिक बढ़ गया है। सुकरात के साथ, गैलीलियो के साथ मंसूर के साथ, सरमद के साथ, दयानन्द के साथ धर्म के इन कथित ठेकेदारों ने जो किया वही कल डॉ. नरेन्द्र डाभोलकर के साथ हुआ और आज स्वामी अग्निवेश के साथ हो रहा है। उन्हें शंकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती आतंकवादी करार दे रहे हैं और अन्य किसी ने उनके सिर पर दस लाख का ईनाम घोषित किया था। इस देश में वेद की बात कहने वालों की जब यह दुर्दशा होगी तो वेद जीवित कहां रहेंगे?इसी मानसिकता को पालने वालों ने दयानन्द को ईसाइयों का एजेंट कह कर बदनाम किया था। काशी-शास्त्रार्थ में पराजित होने वाली पौराणिक मण्डली ने उनके साथ क्या दुर्व्यवहार किया था, तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपे समाचार इसकी साक्षी दे रहे हैं। इस देश का नाम कभी आर्यावर्त था, इसे लोग आज भूल चुके हैं और आर्यत्व को भुला कर हिन्दुत्व के अहंकार में अपने

मूल दर्शन, अध्यात्म, सभ्यता, संस्कृति, धर्म को भुला बैठे हैं। यह आज का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संकट है जिसे मूर्तिपूजा ने भयावह बना दिया है। दयानन्द को पढ़कर भारत के बारे में मैक्समूलर ने अपनी मैकालेवादी बद्धमूल धारणा त्यागकर जो भव्य धारणा बनाई थी क्या वह धारणा एक आम भारतीय या एक आम हिन्दू अपना पायेगा?जिस विदेशी षड्यन्त्र के तहत दयानन्द की महिमा को खत्म करने के लिए विवेकानन्द को महिमा मण्डित किया गया क्या उस षड्यन्त्र को सफल बनाने वाले भारतीयों की मानसिकता में कभी बदलाव आयेगा?शायद नहीं, क्योंकि यही लोग मांसभक्षण, मूर्तिपूजा, गुरुडम, तीर्थाटन, अन्धविश्वास, पाखण्ड को बढ़-चढ़कर पोषित कर रहे हैं।

मूर्तिपूजकों की भूल

मूर्तिपूजा : मूल में भूल इस कारण है कि ईश्वर, जीव, प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को मूर्तिपूजक भुला बैठे हैं। धर्म, अध्यात्म, स्तुति, प्रार्थना, उपासना की जो वैदिक परम्परा थी उसे मूर्तिपूजक त्याग बैठे हैं। मूर्तिपूजक शार्ट-कट-रूट अपना रहे हैं जिससे गुरुडम पनप रहा है। मूर्तिपूजक मिथ्या अवधारणाओं को जन्म दे रहे हैं जिनकी पुष्टि वेदों से नहीं होती। आस्था, श्रद्धा और विश्वास की परिभाषा को मूर्तिपूजक बदल रहे हैं। मूर्तिपूजक तर्क के स्थान पर वितण्डा का आश्रय ले रहे हैं जबकि तर्क को भी ऋषि माना गया है। मूर्तिपूजकों का इतिहास, परम्परा, तुलनात्मक अध्ययन, वैज्ञानिक चिन्तन से कोई लेना-देना नहीं है। आज भी दुनिया में करोड़ों लोग निराकारवादी हैं, ये देखने को मूर्तिपूजक तैयार नहीं। मूर्तिपूजकों के अपने ही शास्त्रों में निराकार उपासना के उद्धरण भरे पड़े हैं लेकिन उन्हें पढ़ने-सुनने-गुनने अपनाने को वे तैयार नहीं हैं। लगता है जैसे कुएं में भांग पड़ी है ऐसी वैचारिक अराजकता के चलते सुधार की कम बिगाड़ की अधिक सम्भावना है। इस स्थिति के रहते यदि मूर्तिपूजकों के जगत् गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज स्वामी दयानन्द के दर्शन, चिन्तन, आदर्श पर चलते हुए, वेदों को शिरोधार्य करते हुए मूर्तिपूजा का खण्डन करने वाले, तीर्थाटन को पाखण्ड बताने वाले, अमरनाथ दर्शन, कुम्भ स्नान और कांवड़ यात्रा को अंधविश्वास कहने वाले स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहते हैं तथा सुदर्शन टी. वी. इस मसले पर उनकी कड़ी भर्त्सना करते हुए यदि यह कहता है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते तो हम अत्यंत विनम्रता से पूछना चाहते हैं कि यदि स्वामी अग्निवेश इसी योग्य हैं तो कबीर, नानक, संत दादू, संत तुकाराम, दयानन्द को वे किस कोटि में रखेंगे?वैदिक वाङ्मय को और उन पौराणिक शास्त्रों को तथा आदि गुरु शंकराचार्य को किस कोटि में रखेंगे जिन्होंने मूर्तिपूजा के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लगाया हुआ है?यदि स्वामी अग्निवेश आतंकवादी हैं तो वे सनातनी धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में आतंकवाद फैलाते हुए व्यवस्था दी थी कि गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित परिवर्तनशील वैदिक वर्ण व्यवस्था गलत है और जन्म, जाति, व्यवसाय आधारित निरंकुश वर्ण व्यवस्था सही है?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने पशु-बलि और नर-बलि को शास्त्र अनुमोदित घोषित कर इस पवित्र परम्परा को दूषित किया हुआ था?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने नारी व शूद्र से वेद के पढ़ने-पढ़ाने व सुनने-सुनाने का अधिकार छीन कर व्यवस्था दी थी कि यदि वे वेद पढ़ते हैं तो उनकी जिह्वा काट लो और यदि वेद सुनते हैं तो उनके काल में पिघला रांग डाल दो?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने मातृ-शक्ति नारी को नरक का द्वार घोषित किया था?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने समुदाय विशेष के लोगों पर मंदिर प्रवेश का निषेध थोप रखा था, सार्वजनिक कुंओं से उन्हें पानी भरने से रोकते थे, ब्राह्मण से दूरी बनाकर चलने को बाध्य करते थे?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने कथित शास्त्रों के आधार पर विधवा विवाह पर रोक लगा रखी थी, बाल विवाह की अनुमति दे रखी थी और सती प्रथा जैसी नृशंस व क्रूर व्यवस्था को जबरन महिलाओं पर लाद रखा था?यदि ये धर्माचार्य आतंकवादी नहीं थे तो स्वामी अग्निवेश आतंकवादी कैसे हो गये जो उम्र भर इन अवैदिक व्यवस्थाओं को नामशेष कराने के लिए संघर्ष करते रहे हैं?यही धर्माचार्य कथित शास्त्रों के बल पर, जन-बल व धन बल पर टी. वी. चैनलों पर मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, कुम्भ स्नान, कांवड़ यात्रा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद आदि को महिमा-मण्डित व पोषित प्रसारित करते आ रहे हैं। यही लोग चमत्कारों, विलक्षण प्राकृतिक घटनाओं व भविष्यवाणियों का दोहन कर लोगों की आस्था, श्रद्धा, विश्वास को भुना रहे हैं। इस समूचे गोरखधन्धे के विरुद्ध, जिसका कोई वैदिक आधार नहीं है, यदि स्वामी अग्निवेश खड़े हैं तो वे आतंकवादी कैसे हो गये?हम ईश्वर को, अपनी आस्था व श्रद्धा को अपने निहित स्वार्थों के अनुकूल नहीं गढ़ सकते, बल्कि जो ऋषि परम्परा कहती है, योग दर्शन कहता है, वैदिक शास्त्र कहता है, तर्क और विज्ञान जिस पर अर्घ्य चढ़ाता है उसे ही स्वीकारना होगा। मूर्तिपूजा वस्तुतः मृग-तृष्णा है, मरुस्थल में जल का भ्रम प्यासे हिरण में पैदा करती है, भौतिक सुख-सम्पदा के वांछित लोग मूर्तियों के शरणागत होकर किसी चमत्कार की आशा से बंधे होते हैं और यह झूठी आशा प्रचार संसाधनों द्वारा उनमें जगाई जाती है। प्रारब्ध और कर्मफल के अनुसार लाखों में किसी की आस पूरी हो जाती है तो उसे साक्षी रूप में प्रस्तुत कर भ्रम फैलाया जाता है कि अमुक गुरु सिद्ध पुरुष है, ईश्वर का साक्षात् अवतार है, अमुक स्थान या मन्दिर सिद्ध पीठ है, जहाँ सच्ची श्रद्धा से आने वालों की मनोकामना तत्काल पूरी होती है। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति पूरी श्रद्धा व आस्था से ईश्वर के शरणागत होकर यदि अपने घर में बैठकर भी कोई कामना करेगा तो वह अवश्य पूरी होगी। यह मैं किसी सुनी-सुनाई, लिखी-कही बात पर नहीं बल्कि अपने अनुभव अनुभूति पर आधारित एक ऐसी ही विलक्षण घटना के आधार पर कह रहा हूँ जिसने मेरे जीवन का कांटा ही बदल कर रख दिया था। कामना का पूर्ण होना व्यक्ति के अपने प्रारब्ध, अपने कर्मफल, अपनी श्रद्धा, अपनी आरधना व उपासना तथा अपनी निष्ठा और पवित्र भावना और ईश्वर के प्रति उसकी शरणागति पर निर्भर करता है न कि किसी स्थान विशेष अथवा मूर्ति पर निर्भर करता है। परमात्मा सर्वव्यापी है, घट-घट में रमा हुआ है, हमारी आत्मा में विराजमान है अतः जब भी सच्चे मन से, भाव-विभोर होकर उसके शरणागत होंगे तो वह निराश नहीं करेगा। यदि शिरडी के साईं बाबा के दरबार में सभी के मांगने से मुरादें पूरी होती हैं जैसा कि दावा किया जाता है तो साईं ट्रस्ट औषधालय क्यों खोले बैठा है?रोगियों के रोग मन्नत से ही दूर हो जाने चाहिएँ।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

पर्यावरण प्रदूषण और समाधान

– ब्र. रंजिता आर्या, शास्त्री तृ. वर्ष आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही, राज.

पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण विज्ञान अथवा पर्यावरण का अध्ययन आधुनिक समय का एक महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य विषय बना हुआ है।

पाणिनीय व्याकरण के अनुसार पर्यावरण शब्द परि तथा आङ् उपसर्ग पूर्वक वरणार्थक वृङ् या वृ धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से बनता है। परि का अर्थ है – सर्वतोभावे= चारों ओर एवं आङ् का अर्थ सामने तथा आवरण का अर्थ ढकना या आच्छादन करना होता है। परितः आवृणोति इति पर्यावरणम् अर्थात् जो व्यक्ति को, समाज को चारों ओर से घेरे हुए है वह पर्यावरण है।

सभी प्राणी अपनी अन्तः प्रेरणा से पर्यावरण से अपनी अनुकूलता बनाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु मनुष्य ऐसा प्राणी है जो पर्यावरण से अपनी अनुकूलता बनाने की बजाय पर्यावरण को अपने अनुकूल ढालना चाहता है।

पर्यावरण के आधार

पर्यावरण हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, इसलिए स्वच्छ पर्यावरण का हमारे लिए विशेष महत्त्व है। वह वायु जिसमें हम श्वास लेते हैं, पानी जिसे हम पीते हैं, मिट्टी जिसमें खेलकर हम बड़े होते हैं, घर आंगन बगीचों में लगे पेड़ पौधे उन पर पलने बसने वाले पशु पक्षी तथा सूर्य का प्रकाश ये सभी हमारे पर्यावरण का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं। हमारे सारे क्रिया-कलाप और हमारी गतिविधियाँ ठीक न होने पर पर्यावरण असंतुलित होता है हमारी सोच सही होने पर एवं हमारे काम करने का ढंग ठीक होने पर पर्यावरण का संतुलन बना रहता है।

मनुष्य की प्रकृति उपभोगी है, उसकी यह प्राकृतिक प्रवृत्ति पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ती है। जिसके वशीभूत होकर मनुष्य अधिक से अधिक संसाधनों का उपभोग करना चाहता है, जितना अधिक उपभोग उतना अधिक विकास। इस अवधारणा के चलते विकसित देशों की देखा देखी विकासशील देशों के भी लोगों को अधिक से अधिक उत्पादों के उपभोग करने की आदत बढ़ गई है।

पर्यावरण प्रदूषण व योगक्षेम का केन्द्र यज्ञ

आज विश्व के अस्तित्व के लिए सर्वाधिक घातक समस्या यदि कोई है तो वह है पर्यावरण प्रदूषण। सर्वगामी प्रदूषण ने वैज्ञानिकों, चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों को गम्भीर चिन्ता में डाल दिया है। विगत शताब्दी से ही औद्योगीकरण, शहरीकरण और जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि हुई है, जो प्रकृति संतुलन बिगड़ने का कार्य कर रही है। निरंकुश भोगवाद की प्रवृत्ति के कारण प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन से पर्यावरण में प्रदूषण की बढ़ोत्तरी होती है। प्रदूषण एक ऐसा जहर है, जो धीरे-धीरे पर्यावरण में घुसता है तथा कालान्तर में अपने जनक को भस्मासुर की तरह भस्म करने में उद्यत हो जाता है। बढ़ते हुए प्रदूषण का निवारण करने के लिए हवन, यज्ञ को अत्यन्त सुगम, श्रेष्ठ, साधन माना गया है क्योंकि हमारे समस्त योगक्षेम का केन्द्र यज्ञ है।

पर्यावरण प्रदूषण का कारण

वर्तमान में प्रदूषण फैलने का कारण वेदोक्त धर्म रूप यज्ञ का न करना, एवं औद्योगिक कारखानों से अशुद्ध पदार्थ व कचरा निकलने की उचित व्यवस्था का न होना, पवित्र नदियों में शहरों का मलमूत्र आदि गंदगी एवं मलबा डालना, ढेर सारे वाहनों से निकली दूषित वायु की रोकथाम की व्यवस्था न होना, बड़े-बड़े शहरों में अधिकतर सरकार द्वारा सफाई की सुव्यवस्था न होने के फलस्वरूप घरों के कूड़े करकट को जहाँ कहीं भी डाल देना, खुली नालियों में गंदगी का जमा होना, अव्यवस्थित झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली जनता द्वारा जहाँ-तहाँ मलमूत्र का त्याग तथा स्नानादि एवं उनकी सुव्यवस्था न करना यह सब जल, वायु प्रदूषण के मुख्य कारण हैं।

संसार का इतिहास उठाकर देखने से ज्ञात होता है कि जब से यह संसार बना है तभी से इसके सम्मुख कोई न कोई समस्या सदैव रहती है, किन्तु कभी-कभी कोई समस्या ऐसा विकराल रूप धारण कर आन उपस्थित होती है कि समस्त संसार को उद्वेलित करके रख देती है। वर्तमान युग में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ऐसी ही समस्या है कि जिसने सम्पूर्ण मानव जाति की नींद उड़ाकर रख दी है। इस समस्या की भयंकरता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ को संसार के समस्त देशों के नाम एक अपील जारी करनी पड़ी है यह धरती और उस पर उपलब्ध वायु, जल और अन्य जीवधारक तत्व यदि एक बार विषाक्त और भ्रष्ट हो गये, तो दुबारा इनका निर्माण करने का सामर्थ्य मानव में नहीं है, इसलिए इसको रोकने के लिए यथासम्भव उपाय किये जाने चाहिए।

वस्तुतः पर्यावरण प्रदूषण विश्व की भयंकरतम समस्या है तथा सारा विश्व इसके दुष्परिणामों की भीषणता को देखकर अत्यन्त चिन्तित है, पर विडम्बना यह है कि जितनी इस पर चिन्ता जताई जा रही है उतनी ही प्रबलता एवं तीव्रता से प्रदूषण भी बढ़ रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण व निवारण

हम अच्छी प्रकार जानते हैं कि यह समस्या किसी और की नहीं, स्वयं मानव द्वारा खड़ी की गई है। पर्यावरण के अपकर्ष के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है। वायु प्रदूषण हो या जल प्रदूषण अथवा ध्वनि प्रदूषण इन सबके लिए वही जिम्मेदार है। शुद्ध पर्यावरण ईश्वर के द्वारा प्रदत्त अनुपम प्राकृतिक देन है, किन्तु मानव के हाथों यह अनुपम वरदान भी एक अभिशाप बनकर आ खड़ा हुआ है। तो यह वरदान अभिशाप कैसे बन गया इस विवेचना में सर्वप्रथम वायु प्रदूषण पर विचार है।

वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण की समस्या के हल होने पर, उसकी उपादेयता बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि समस्त जीव जगत् वायु के आश्रित ही जीवित हैं। हम मकान के बिना भी जीवित रह सकते हैं, भोजन के बिना भी लोग कुछ दिन यानी चालीस पचास दिन तक जीवित रह सकते हैं, पर जल के बिना तो चार पांच दिन काटने भी मुश्किल हो जाते हैं, किन्तु वायु के बिना अर्थात् श्वास लिए बिना तो दस मिनट तक जीवित रह पाना कठिन हो जाता है, तात्पर्य यह है कि वायु मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताओं में से भी अनिवार्यतम आवश्यकता है।

प्राणी जगत के लिए वायु जितनी उपयोगी और आवश्यक है उतनी ही अधिक मानव द्वारा यह प्रदूषित की जा रही है। हम स्वच्छ वायु में श्वास लेते हैं, किन्तु निकालते गन्दा करके हैं। पर यह प्राणी मात्र की मजबूरी है, हम इसे रोक नहीं सकते। हम भोजन पकाने के लिए आग जलाते हैं आग जलाने में प्रदूषण तो होगा ही, यह भी हम रोक नहीं सकते, पर इतना तो कर सकते हैं, ऐसे ईंधन का प्रयोग करें जिससे कम से कम वायु प्रदूषण हो। डीजल और पेट्रोल से चलने वाले वाहन, रेल, इंजन और वायुयान आदि निरन्तर वायु को प्रदूषित कर रहे हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का मत है कि विश्व में चौंसठ प्रतिशत प्रदूषण केवल वाहनों से होता है और वाहनों से निकलने वाले धुएं से सबसे जहरीली गैस कार्बन मोनो ऑक्साइड होती है, इसके अतिरिक्त सीसा, कार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बनडाई ऑक्साइड और गन्धक आदि कई अन्य विषैली गैसें होती हैं जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त घातक मानी गई हैं। इनसे होने वाली बीमारियों में प्रमुख बीमारियाँ आंख, गला, सीना, फेफड़े और त्वचा में होने वाली बीमारियाँ हैं, ये विषैली गैसें पेड़ पौधों को भी प्रदूषित कर रही हैं।

कल कारखानों की चिमनियां निरन्तर विष उगल रही हैं, इनसे होने वाले प्रदूषण की भयंकरता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश के हर साल बीस लाख से भी अधिक लोगों की मृत्यु इसी प्रदूषण के कारण हो जाती हैं। अकेले महाराष्ट्र में छः हजार ऐसे कारखानें हैं जो प्रदूषण फैला रहे हैं। दूरदर्शन व समाचारों में बताया गया कि अहमदाबाद औद्योगिक नगर के कारखानों की चिमनियां विभिन्न जहरीली गैसों के अलावा 15 हजार टन राख उगलती है। कलकत्ता भारत का प्रमुख औद्योगिक शहर है यहां प्रतिमाह 50 टन वर्ग मील की दर से कालिख तथा राख कणिका धूल गिरती है अतः इसे 'स्मोक सिटी ऑफ इण्डिया' का पद दिया गया है। मध्य प्रदेश सारणी ताप बिजली घर से प्रतिदिन उड़ने वाली 1000 टन कोयले की राख तथा सल्फर ऑक्साइड गैस आस-पास के वनों के लिए भारी खतरा बनी हुई

है। राजस्थान में सीमेंट की फैक्ट्रियां 660 टन विषैले पदार्थ और राख फेंक रही हैं। इस सारे प्रदूषण से ओजोन की परत की बढ़ती उष्णता की भयंकर समस्या पैदा हुई है। इस प्रकार हम स्वयं महाविनाश को निमंत्रण देने पर लगे हुए हैं। प्रलय काल से पूर्व ही प्रलय आता दिखाई दे रहा है, क्या अब भी नहीं चेतेंगे हम?

जल प्रदूषण

वायु के उपरान्त जल सृष्टि में जीवन का प्रमुख आधार है। जल प्रदूषण की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। मनु महाराज ने तो जल में थूकने तक को मना किया है, किन्तु हम है कि मल मूत्र तथा गन्दे नालों का पानी युगों से पवित्र मानी जाने वाली नदियों में प्रवाहित करते जा रहे हैं। वायु मण्डल में जो गन्दगी फेंकी जा रही है, उसका एक बड़ा भाग वर्षा के द्वारा पृथ्वी पर आ गिरता है, परिणामस्वरूप नदियों का जल और भी प्रदूषित हो जाता है। रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाएं जो फसलों पर छिड़की जाती हैं, वे वर्षा के पानी के साथ मिलकर भूमिगत जल को भी प्रदूषित कर रही हैं, परिणामस्वरूप पीलिया रोग भयंकररूप धारण कर रहा है। गंगा, यमुना जैसी नदियों का गन्दे नालों में बदल जाना जल प्रदूषण की तस्वीर ही तो प्रस्तुत कर रही है पर हम हैं कि फिर भी नहीं चेतते।

पार्थिव प्रदूषण

पार्थिव= पृथ्वी प्रदूषण में अहं भूमिका है कचरे की। कूड़े करकट के निकालने की उचित व्यवस्था न होने के कारण घरों में कूड़े करकट को जहां कहीं भी फेंक देना इससे जल और पार्थिव दोनों प्रकार का प्रदूषण फैल रहा है। मानव द्वारा फेंके गये कूड़े को जिस स्थान पर दबा दिया जाता है, वह स्थान कृषि योग्य नहीं रह जाता है। इसी प्रकार अधिक उत्पादन के लिए किये गये कीट नाशकों के छिड़काव से भी पृथ्वी के स्वरूप में विषाक्ता बढ़ती जा रही है, जिससे सूक्ष्म जैवी विविधता नष्ट हो रही है और भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है।

सामाजिक प्रदूषण

प्रदूषण केवल वाह्य प्रकार से ही नहीं, अपितु हमें अन्दर से भी खोखला कर रहा है, समाज में बढ़ता धूम्रपान इनमें से एक है। पूरी दुनियां में प्रत्येक वर्ष 35 लाख व्यक्तियों की मृत्यु तम्बाकू सेवन से होती है। धूम्रपान के इन दुष्परिणामों का असर भारत में सर्वाधिक पाया जाने लगा है। भारत वर्ष में प्रतिवर्ष 25 करोड़ किलो तम्बाकू खाया जाता है। धूम्रपान की भांति गुटखा संस्कृति भी समाज को बुरी तरह से संत्रस्त कर रही है। इनका सेवन करने वाले यह नहीं जानते कि इनका सेवन उन्हें कैंसर, दमा, टी. बी, अल्सर, हृदय रोग आदि अनेक प्रकार के रोगों की यात्रा कराता हुआ मृत्यु की ओर ले जाता है।

ध्वनि प्रदूषण

इन सबके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण भी एक समस्या है, जिसमें शोरशराबा ऊँचे-ऊँचे स्वरों में रेडियो, दूरदर्शन इत्यादि का सुनना दिनरात ऊँचे-ऊँचे आवाजों में लाउडस्पीकरों का कोलाहल इत्यादि ऐसे व्यवहार मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्थितियों पर आघात कर उसे रोगी बनाये जा रहे हैं।

शान्तिपाठ के नाम से प्रसिद्ध यजुर्वेद के एक मंत्र में सृष्टि के पदार्थों में सन्तुलन बनाये रखने का उपदेश दिया गया है –

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि॥ यजु. 36/17

इस मन्त्र में प्राकृतिक पदार्थों में शान्ति अर्थात् सन्तुलन बनाये रखने का उपदेश दिया है। मंत्र में पर्यावरण समस्या के प्रति, मनुष्य के प्रति मनुष्य को सचेत किया है। पृथिवी, जल, औषधि, वनस्पति आदि में शान्ति का अर्थ है इनका सन्तुलित बने रहना। जब इनका सन्तुलन बिगड़ जायेगा, तभी इनमें विकार उत्पन्न हो जायेगा। पर्यावरण के इन सभी जड़ पदार्थों का सन्तुलन अन्ततः पर्यावरण के चेतन तत्त्व मनुष्य पर निर्भर करता है क्योंकि ईश्वर ने सभी प्राणियों में विवेक केवल मनुष्य को ही दिया है कि जो सोच विचार कर विवेक बुद्धि से काम करता है। मनुष्य वही है – **'मत्वा कर्माणि यः सीव्यति सः मनुष्यः'** जो मनन पूर्वक कार्य करता है। लेकिन आज का मनुष्य प्रकृति के उपभोग की आसक्ति में अन्धा होकर अपना विवेक खो चुका है, अतः वह विवेक हीन होकर प्राकृतिक पदार्थों के अन्धाधुन्ध दोहन को ही सुख का आधार एवं जीवन का सार समझ रहा है। परिणामतः जिस डाल पर उसका अस्तित्व टिका हुआ है वह उसी को काट रहा है। हम भारतीय ऋषि की चेतावनी भूल गए कि "प्राप्य पाश्चात्यतां गच्छत्यधरस्तं च भानुरिव" अर्थात् पश्चिम की नकल करके वेस्टर्नाइजेशन स्वीकार करके हम अधोगति और अन्ततः विनाश को ही प्राप्त होंगे जैसे सूर्यप्रभा पश्चिम में जाकर मन्द और लुप्त हो जाती है। किन्तु भारत भा = प्रकाश या ज्ञान की खोज और प्राप्ति में रत = लगे हुए मनस्वी, तपस्वी ऋषियों की भूमि है, जिन्होंने पर्यावरण व मैत्री वाली संस्कृति या यशमय जीवन का दर्शन विश्व को दियाहै।

प्राचीन काल में जब केवल वैदिक संस्कृति ही पृथिवी पर अपने वैभव से पूर्ण थी, उस समय हमारे ऋषि मुनि नित्य विधिपूर्वक यज्ञ किया करते थे। क्योंकि यज्ञ मनुष्य का श्रेष्ठतम कर्म है, इसलिए ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा गया है कि "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" शत. ब्रा. 1/7/1/5, अर्थात् यज्ञ सर्वश्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ कीमहिमा को प्रस्तुत करते हुए ऋग्वेद में कहा है – "अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः" ऋ. 1/164/35, अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र है। सब जानते हैं कि गर्भ में बालक नाभि के द्वारा ही माता से भोजन प्राप्त करता है, ठीक ऐसे ही यज्ञरूपी नाभि के माध्यम से ही सम्पूर्ण विश्व का भरण-पोषण होता है। व्यास ने इसे विस्तार से समझाते हुए कहा है –

अन्नाद् भविन्त भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥

महाभा. भीष्म. 27/14॥

अथात् अन्न से सब प्राणियों का जीवन चलता है अन्न वर्षा से पैदा होता है और वर्षा यज्ञ से होती है। इसलिए यजुर्वेद में निकामे निकामे नः पर्जन्यो, यजु. 22/22, की प्रार्थना की गई कि हम जब चाहे तब वर्षा हो। ऐसा यज्ञ से ही सम्भव है। सामवेद में कहा है –

अक्रांत्समुद्रः प्रथमे विधर्मजनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः॥

साम. 529॥

अर्थात् यज्ञ की अग्नि में डाले हुए पदार्थ वर्षा का पानी बरसाने का कारण बनते हैं। पृथिव्यादि लोक की जनता को अन्नादि वनस्पति एवं गौ आदि पशुओं के लिए चारा बढ़ाकर जीवन की रक्षा करते हैं।

चारों वेदों में सूर्य को ऊर्जा का स्रोत कहा है। ऋग्वेद में कहा है कि सूर्य की एक किरण ही तीसियों सरोवर का जल पी जाती है, अर्थात् अन्तरिक्ष में इस प्रकार जल का अनन्त भण्डार है। परन्तु जैसे ग्वाला गाय को चारा देता है, तब गाय बदले में उसे अमृतरूपी दूध देती है, इसी प्रकार जब यज्ञ की अग्नि में डाली हुई सामग्रीरूपी चारा वायु के साथ सूर्यलोक में पहुँचता है, तब सूर्य शुद्ध वर्षा पृथिवी पर करता है।

यजुर्वेद में इषे त्वोर्जे. यजु. 1/1, मंत्र में यज्ञ करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि यज्ञ सब रोगों का नाशक है। यजुर्वेद में कहा कि आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पताम्., यजु. 18/29, अर्थात् आयु यज्ञ से बढ़ती है, इन्द्रियाँ यज्ञ से शुद्ध होती हैं, परमात्मा यज्ञ से प्राप्त होता है इत्यादि यज्ञ के अनेक गुण कहे हैं।

सारांश यह हुआ कि प्रत्येक मनुष्य को पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ अवश्य करना चाहिए, क्योंकि वेदों में कहे गये यज्ञ से ही इस गम्भीर समस्या का समाधान निश्चित, प्रामाणिक एवं तुरन्त प्रभावशाली होता है।

अन्त में पर्यावरण के विषय में यही कहा जा सकता है पृथिवी हमें शान्ति दे, द्यौ, जल, औषधि, वनस्पति आदि सब देवता शान्ति प्रदान करें, इन सबसे प्राप्त शान्ति मुझे शान्ति प्रदान करें।

thearyasamaj.org

महँगाई दूर भगायें आर्य समाज में आएँ

–डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

यह सत्य है कि आर्य समाज में आने से महँगाई दूर हो सकती है वैसे तो आर्य समाज में आने से भ्रष्टाचार, पाप, अपराध, अन्धविश्वास व पाखण्ड सब असत्य व अन्धकार दूर होते हैं परन्तु मंहगाई क्योंकि एक सामान्य समस्या है उसका भी दूर होना अत्यावश्यक है इसके सूत्र आर्य साहित्य जैसे सत्यार्थ प्रकाश आदि में मिलते हैं।

1. तीर्थ यात्राएँ – सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार तीर्थ उसे कहते हैं जिससे तेरे! मन का मैल सत्य के संग से दूर होता है तन का मैल जल में स्नान से दूर होता है। आज तीर्थों के नाम पर अत्यधिक धन खर्च किया जाता है। हरिद्वार, काशी बनारस, सोमनाथ, वैष्णो देवी, केदारनाथ, पशुपतिनाथ, यहां ईश्वर एक देशीय होकर नहीं रहता वह तो सर्वव्यापक है कण-कण में है। निराकार सर्वशक्तिमान है जब उसकी कोई मूर्ति ही नहीं तो मन्दिर में मूर्तियाँ कहाँ से आ गईं। यह मूर्तियाँ मनुष्य की कल्पना है इनको स्नान कराना नैवेद्य चढ़ाना वाज आभूषण पहनाना हमारा भ्रम है इनके नाम पर अनेक लोग लाखों सहस्रों रुपया पानी की भांति बहा देते हैं। बाहर जाने वाले ग्राम व नगर में सहस्रों को भोज कराते हैं। वहां पचास हजार से एक लाख रुपया तक मध्यम वर्गीय व्यक्ति खर्च कर देता है। तत्पश्चात् गाड़ी बुक करते हैं, आने जाने का उसका भी पचास हजार हो जाता है। ऐसे ही जात देने जाते हैं उसमें भी पूरे परिवार का कम से कम पचास हजार खर्चा हो जाता है। ऐसे ही प्रत्येक प्रान्त में नए-नए व पुराने अनेक पर्व, मेले मनाए जाते हैं गुछाल का मेला दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, वैष्णो, अर्धकुमारी यात्रा इनमें भी सहस्रों लाखों रुपया खर्च हो जाता है।

ये व्यक्ति जब आर्य समाज से जुड़ेंगे तो इन अंधविश्वासों से दूर हो जायेंगे और व्यर्थ में बहाया जाने वाला रुपया बच जायेगा। फिर यह धन बच्चों की शिक्षा स्वास्थ्य व निवास पर काम में आयेगा। यह बहुत बड़ी बात है। यदि यही समझ में आ गया कि ईश्वर क्या है। तो मनुष्य अंधविश्वासों, तीर्थों, यात्राओं पर व्यर्थ में बहाए जाने वाले धन से बच जायेगा। तीर्थ यात्रा का खर्चा अधिक होता है। मध्यम वर्गीय को तो अपना जीवन यापन ही कठिन हो जाता है। अच्छा भोजन, अच्छा निवास व वस्त्रों की समस्या, शिक्षा की समस्या, व्यवसाय की समस्या एवं स्वास्थ्य की समस्या बनी रहती है। इतना धन जो तीर्थों पर व्यय होता है शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि पर किया जाना चाहिए। इन अन्धविश्वासों का निराकरण आर्य समाज जाने से आर्य साहित्य पढ़ने से ही हो सकता है।

2. भूत प्रेत – भूत कहते हैं जो बीत गया और प्रेत जो शव होता है निर्जीव देह होती है। परन्तु अज्ञानतावश लोगों ने भूत-प्रेत नाम से भय बनाया हुआ है। आज भी अनेक अज्ञानी लोग झाड़-फूँक, टोटका-टोना करते कराते फिरते हैं। तांत्रिकों की अंधविश्वास रूपी दुकानें इससे ही चलती हैं। यह तांत्रिक अपने पास श्मशान घाट की राख आदि रखते हैं। हड्डियाँ रखते काले पीले वस्त्र पहन तरह-तरह की आवाजें निकाल लोगों को डराते-फिरते हैं। एक तो रोगी उसे अपना ही कुछ पता नहीं, उससे भांति-भांति के प्रश्न पूछते हैं, जिन्हें रोगी कुछ का कुछ बता देता है। पूछते हैं "क्या नाम है तेरा?रोगी बोलता है मेरा नाम सुन्दर लाल है, मैं राजपुर का रहने वाला हूँ, इसे लेने आया हूँ।" ऐसी बातों, बिना सिर पैर के संवादों से देखने वाले भी घबरा जाते हैं। इसी बात का तांत्रिक भूत अथवा ऊपर का चक्कर जिसे हवा भी कहते हैं उसे भगाने या दूर करने के लिए सिद्धि करने का नाटक करते हैं उसका खर्चा लेते हैं। रोगी के घर वाले उसे तुरन्त दे देते हैं। न देने पर तांत्रिक कहता है कि यह भूत तुम्हारे यहाँ किसी पर आ गया तो नाश कर देगा।

यह सब अंधविश्वास है, अवैज्ञानिक है। जो अज्ञानी है, जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, वेद मंत्रों की व्याख्या नहीं पढ़ी, गौकरुणानिधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, स्वमन्तव्य प्रकाश

आदि आर्य साहित्य नहीं पढ़े वह ही ऐसे मूर्खों, तांत्रिकों के जाल में फंसते-फिरते हैं। अपना परिश्रम का धन गंवाते रहते हैं। यदि तांत्रिकों के दुष्कर्म वैज्ञानिक होते तो प्रत्येक हास्पिटल में इनकी नियुक्ति कर दी जाती परन्तु यह कार्य अंधविश्वास, छल, पाखण्ड से भरा है कहीं-कहीं तो रोगियों पर अमानवीय कार्य तक किया जाता है।

3. बलिप्रथा – बलि प्रथा पर रोक है। परन्तु अभी भी अनेक स्थानों पर यह प्रथा चल रही है। रोग ठीक करने, घर बनाने को, सन्तान हीन के सन्तान करने को, बिगड़ा काम बनाने को, देवी देवताओं को प्रसन्न करने को मुर्गा, बकरा की बलि दी जाती है। यहाँ तक कि अनेक स्थानों पर छोटे बच्चों को पकड़ कर बलि दे दी जाती है। ऐसे समाज के शत्रु आज भी मिल जाते हैं। कई बार देखा गया है कि छोटे बालकों को चोरी कर लिया जाता है फिर कुछ दिन बाद उनका शव कहीं का कहीं पड़ा मिलता है। ऐसे पाशविक अत्याचार करने वाले आज भी कम नहीं है। यह अन्धविश्वास है, पाखण्ड है। यदि सत्यार्थप्रकाश का ज्ञान जन-जन को कराया जाये तो यह असामाजिक रोग दूर किया जा सकता है इस प्रकार के पाखण्ड से घर परिवार जन व धन की हानि होती है, मिलता कुछ नहीं। सभ्य व श्रेष्ठ लोग इन जालों व झंझटों में कभी नहीं पड़ते।

4. विवाह संस्कार, जन्म दिन आदि – आज इनका रूप एक दम अवैदिक व अत्यधिक खर्चीला हो गया है। व्यक्ति अपने जीवन भर का धन इस हेतु लगा देते हैं। जो कार्य कुछ सहस्र का होता है कई लाख पानी की भांति धन बहा दिया जाता है। विवाह संस्कार केवल मात्र बीस इक्कीस लोग जो बाराती आदि हों, घर आस-पड़ोस वालों के मध्य घर पर ही सम्पन्न होना चाहिए। जो आर्य विद्वान् द्वारा किया जाये, जिसमें स्वागत, प्रदक्षिणा, ध्रुवदर्शन, शिलारोहण आदि कराए जाते हैं, शिक्षा दी जाती है। आवश्यक वस्तुएँ "वस्त्र आदि दे दिए जाते हैं, अति साधारण होना चाहिए। परन्तु आज लाखों रुपये के मैरिज होम, लाखों का भोजन लाखों की सजावट होती है। दहेज की माँग की जाती है। सामर्थ्य से अधिक दहेज देना भी ठीक नहीं और मांगने वाला तो एक अन्यायपूर्ण कार्य कर रहा है। पहले एक रुपये से विवाह हो जाते थे और पूरे जीवन बेटी सुखी रहती थी। पति के परिवार में घुल मिल जाती थी। आज विवाह पश्चात प्रताड़ना मिलती रहती है उन्हें वधू से अधिक धन की अभिलाषा होती है। और वधू को, इसके बदले प्रताड़ित करते रहते हैं।

दहेज लेने देने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए। यह एक सामाजिक रोग है। विवाह बिना मैरिज होम व अनावश्यक सजावट के होने चाहिए। दहेज का लोभ छोड़ स्वास्थ्य देखना चाहिए।

महाराज मनु ने हाथी, घोड़े, धन-धान्य आदि को भी त्यागने को कहा है और कहा है कि कुछ लगभग दश कुलों में विवाह न होना चाहिए।

जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, शरीर पर बड़े-बड़े लोम अथवा बवासीर, क्षयी, दमा, खांसी, आमाशय, मिरगी, श्वेत कुष्ठ, गलित कुष्ठ कुलों की कन्या या वर के साथ विवाह न होना चाहिए .....' सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास। इस प्रकार हम आज के आधुनिक कहे जाने वाले आडम्बर व दिखाने वाले विवाह से दूर रहकर पूर्ण वैदिक विधि से विवाह संस्कार कराने से अनेक अनुपयुक्त खर्चों से बच सकते हैं। अनेक आडम्बर जो जीवन में है उन्हें छोड़कर खर्चा कम कर सकते हैं। इस हेतु आर्य समाज में आने से ही मार्ग दर्शन मिल सकता है।

– चन्द्रलोक कालोनी खुर्जा

विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्य समाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्त्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया।

अध्यात्मवाद के यशस्वी सम्पादक एवं प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित करते हुए अपने संदेश में कहा अपने कर्मों को हमें खेती के समान समझना चाहिए। अच्छी फसल पाने के लिए बहुत सी चीजें जरूरी है – अच्छी जमीन, अच्छा बीज, अच्छी खाद, अच्छा पानी, अच्छा परिश्रम, अच्छी सुरक्षा इत्यादि। अच्छा कर्मफल पाने के लिए भी बहुत से तत्त्व जरूरी हैं – अच्छी आत्मा, अच्छा ज्ञान, अच्छा समाज, अच्छा व्यवहार, अच्छी लगन अच्छी नियत आदि।

कर्म और भाग्य के छोरों को मिलाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण वाक्य है – 'कर्म करो और फल को भाग्य पर छोड़ दो।' इससे कभी संभावित निराशा नहीं होगी।

इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रफुल्ल लखानी एवं श्रीमती मीना लखानी थे। इस महायज्ञ में 250 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्य लाभ प्राप्त किया तथा हजारों श्रद्धालुओं ने विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण के लिए आहुतियाँ प्रदान की। अनेक लोगों ने जहाँ गायत्री जाप का संकल्प लिया वहाँ अनेक यजमानों ने यज्ञ करने का व्रत लिया। समाज के यशस्वती प्रधान श्री अमर ऐरी जी एवं मंत्री श्री यश कपूर जी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से विशाल जनसमूह मंत्रमुग्ध हो गया। आचार्य श्री के विचार प्रेरक, उद्बोधक और शान्ति देने वाले हैं। ऐसे विद्वानों को अपने बीच पाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

– सूर्यकान्त मिश्रा, सह सम्पादक-"अध्यात्म पथ"

यज्ञ प्रेमी माँ नहीं रहीं

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 3 सितम्बर, 2014 को नई दिल्ली में हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रूग्ण अवस्था में थी लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह को त्यागा।

आप श्री योगेश मुंजाल, ट्रस्टी, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के अतिरिक्त अन्य कई शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी तथा सुप्रसिद्ध हीरो परिवार के प्रमुख सदस्य की धर्मपत्नी एवं महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जो कि विश्व की आर्य समाजों में चर्चित नाम है, कि पुत्रवधु थी।

आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं और सारे दायित्वों से निवृत्त हो चुकी थी। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। आज के भौतिक वातावरण में महिलायें जहाँ किट्टी आदि परम्पराओं में संलग्न हैं, वहाँ श्रीमती हर्ष मुंजाल जी ने महिलाओं का एक छोटा सा संगठन बनाया जिसकी 60 महिला सदस्यायें हैं। इस संगठन की एक महिला के यहाँ प्रति मास क्रमानुसार यज्ञ करवाया जाता है और श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थीं। निःसन्देह यह अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों को भी इस प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुए हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहाँ प्रतिदिन यज्ञ होता है।

दिनांक 6 सितम्बर, 2014 को हुई प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जन समूह में आर्य जगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही उद्योग जगत् से भी भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे।

ऐसी दिवंगत यज्ञप्रेमी माँ के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिलें।

– अजय सहगल, सम्पादक टंकारा समाचार

thearyasamaj.org

इतिहास की अमर गाथा

आर्यसमाज के इतिहास में अनेक प्रेरणादायक संस्मरण हैं जो अमर गाथा के रूप में सदा सदा के लिए प्रेरणा देते रहेंगे। एक ऐसी ही गाथा रोपड़ के लाला सोमनाथ जी की हैं। आप रोपड़ आर्यसमाज के प्रधान थे। आपके मार्गदर्शन में रोपड़ आर्यसमाज ने रहतियों की शुद्धि की थी। यूँ तो रहतियों का सम्बन्ध सिख समाज से था मगर उनके साथ अछूतों सा व्यवहार किया जाता था। आपके शुद्धि करने पर रोपड़ के पौराणिक समाज ने आर्यसमाज के सभी परिवारों का बहिष्कार कर दिया एवं रोपड़ के सभी कुओं से आर्यसमाजियों को पानी भरने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। आखिर में नहर के गंदे पानी को पीने से अनेक आर्यों को पेट के रोग हो गए जिनमें से एक सोमनाथ जी की माता जी भी थी। उन्हें आन्त्रज्वर (Typhoid) हो गया था। वैद्य जी के अनुसार ऐसा गन्दा पानी पीने से हुआ था। सोमनाथ जी के समक्ष अब एक रास्ता तो क्षमा मांगकर समझौता करने का था और दूसरा रास्ता सब कुछ सहते हुए परिवार की बलि देने का था। आपको चिंताग्रस्त देखकर आपकी माताजी जी ने आपको समझाया की एक न एक दिन तो उनकी मृत्यु निश्चित हैं फिर उनके लिए अपने धर्म का परित्याग करना गलत होगा। इसलिए धर्म का पालन करने में ही भलाई हैं। सोमनाथ जी माता का आदेश पाकर चिंता से मुक्त हो गए एवं और अधिक उत्साह से कार्य करने लगे। उधर माता जी रोग से स्वर्ग सिधार गई तब भी विरोधियों के दिल नहीं पिघले। विरोध दिनों दिन बढ़ता ही गया। इस विरोध के पीछे गोपीनाथ पंडित का हाथ था। वह पीछे से पौराणिक हिन्दुओं को भड़का रहा था। सनातन धर्म गजट में गोपीनाथ ने अक्टूबर 1900 के अंक में आर्यों के खिलाफ ऐसा भड़काया की आर्यों के बच्चे तक प्यास से तड़पने लगे थे। सख्त से सख्त तकलीफें आर्यों को दी गई। लाला सोमनाथ को अपना परिवार रोपड़ से जालंधर लेकर जाना पड़ा। जब शांति की कोई आशा न दिखी दी तो महाशय इंदरमन आर्य लाल सिंह (जिन्हें शुद्ध किया गया था) और लाला सोमनाथ स्वामी श्रद्धानन्द (तब मुंशीराम जी) से मिले और सनातन गजट के विरुद्ध फौजदारी मुकदमा करने के विषय में उनसे राय मांगी। मुंशीराम जी उस काल तक अदालत में धार्मिक मामलों को लेकर जाने के विरुद्ध थे। कोई और उपाय न देख अंत में मुकदमा दायर हुआ जिस पर सनातन धर्म गजट ने 15 मार्च 1901 के अंक में आर्यसमाज के विरुद्ध लिखा 'हम रोपड़ी आर्यसमाज का इस छेड़खानी के आगाज के लिए धन्यवाद अदा करते हैं की उन्होंने हमें विधिवत अदालत के द्वारा ऐलानिया जालंधर में हमें निमंत्रण दिया हैं। जिसको मंजूर करना हमारा कर्तव्य हैं।'

3 सितम्बर 1901 को मुकदमा सोमनाथ बनाम सीताराम रोपड़ निवासी' का फैसला भी आ गया। सीताराम अपराधी ने बड़े जज से माफी मांगी। उसने अदालत में माफीनामा पेश किया। 'मुझ सीताराम ने लाला सोमनाथ प्रधान आर्यसमाज रोपड़ के खिलाफ छपवाई थी, मुझे ऐसा अफसोस से लिखना हैं की इसमें आर्यों की तौहीन के खिलाफ बातें दर्ज हो गई थी। जिससे उनको सख्त नुकसान पहुंचा। इस कारण मैं बड़े अदब (शिष्टाचार) से मांफी मांगता हूँ। मैं लाला साहब के सुशील हालत के लिहाज से ऐसी ही इज्जत करता हूँ जैसा की इस चिट्ठी के छपवाने से पूर्व करता था। मैं उन्हें बिरादरी से खरिज नहीं समझता, उनके अधिकार साधारण व्यक्तियों सहित वैसे ही समझता हूँ जोकि पहिले थे। मुझे आर्य लोगों से कोई झगड़ा नहीं हैं। साधारण लोगों को सूचना के वास्ते यह माफीनामा अखबार सत्यधर्म प्रचारक और अखबार पंजाब समाचार लाहौर में और जैन धर्म शरादक लाहौर में प्रकाशित कराता हूँ।

इस प्रकार से अनेक संकट सहते हुए आर्यों ने दलितोद्धार एवं शुद्धि के कार्य को किया था। मौखिक उपदेश देने में और जमीनी स्तर पर पुरुषार्थ करने में कितना अंतर होता हैं इसका यह यथार्थ उदहारण हैं। सोमनाथ जी की माता जी का नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हैं। सबसे प्रेरणादायक तथ्य यह हैं की किसी सवर्ण ने अछूतों के लिए अपने प्राण न्योछावर किये हो ऐसे उदहारण केवल आर्यसमाज के इतिहास में ही मिलते हैं।

- डॉ विवेक आर्य
ई-मेल :- drvivekarya@yahoo.com,
drvivekarya@gmail.com

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान, समर्पित व सरल व्यक्तित्व

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के 75वें जन्मोत्सव पर

राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में

अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

रविवार 16 नवम्बर, 2014, प्रातः 10 से 2 बजे तक

स्थान : योग निकेतन, रोड नं.-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

आर्य समाज के समस्त संन्यासी, विद्वान, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनायें प्रदान करेंगे तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे।

अपील : स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरूप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा **'स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति'** के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति

मुख्यालय : पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-249407 (उत्तराखण्ड)

शाखा कार्यालय : ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

चौधरी बदलूराम आर्य तीसरी बार आर्य समाज, हिसार के प्रधान निर्वाचित

हिसार : आर्य समाज लाला लाजपतराय चौक, नागोरी गेट, हिसार की कार्यकारिणी व सदस्यों की एक बैठक आर्य समाज के संरक्षक चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मंत्री की अध्यक्षता में हुई। बैठक में आर्य समाज के मंत्री श्री जिले सिंह आर्य ने पिछले वर्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया तथा प्रधान बदलूराम आर्य ने अपनी कार्यकारिणी का इस्तीफा सौंपा। बाद में विचार-विमर्श के बाद आर्य समाज की कार्यकारिणी के सदस्य श्री रतनलाल सैनी ने सभी सदस्यों के समक्ष आगामी एक वर्ष के लिए चौ. बदलूराम आर्य का प्रधान पद के लिए नाम का प्रस्ताव रखा जिसका चौ. हरिसिंह सैनी, श्री राधेश्याम आर्य व श्री रामेश लीखा ने अनुमोदन किया, जिसका सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से समर्थन कियाऔर पुनः निर्वाचित प्रधान श्री बदलूराम आर्य को अपनी कार्यकारिणी को बनाने का अधिकार दिया गया।

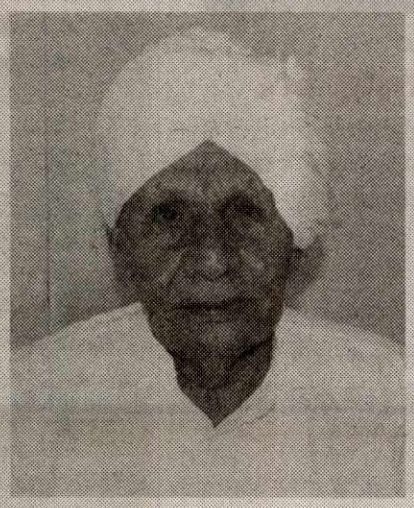

बैठक में सर्वश्री बजरंग लाल गोयल, बलराज मलिक, हरिसिंह पूर्व पार्षद, महावीर सैनी, दौलतराम सैनी, डॉ. मिश्रीलाल, सूबे सिंह आर्य, संतोष कुमार भारीवासिया, जसवन्त आर्य, देवेन्द्र सैनी, श्याम सैनी, बलबीर, प्रोफेसर गोपीचन्द आर्य, नरेन्द्र मिगलानी, मुनि मोहनश्याम आर्य, कान्हाराम चेयरवाल आदि महानुभाव उपस्थित थे।

चौ. बदलूराम, गुरुकुल धीरणवास के प्रधान रहे हैं व वर्तमान में संरक्षक हैं। गुरुकुल आर्य नगर के सक्रिय सहयोगी कार्यकर्ता रहे हैं। वेद प्रचार मण्डल जिला हिसार के कई वर्षों तक प्रधान रहे हैं। आर्य समाज मुकलान के स्थापना से लेकर आज तक प्रधान पद पर सुशोभित हैं।

अग्निलोक आश्रम में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

सोहना 28 सितम्बर, 2014, सोहना क्षेत्र के गांव बहल्पा में स्थित अग्निलोक आश्रम में बंधुआ मुक्ति मोर्चा व दलित जन विकास संगठन के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस स्वास्थ्य जांच शिविर में मेडिकेयर अस्पताल, सोहना के अनुभवी डाक्टरों की टीम द्वारा जांच की गयी। शिविर का शुभारम्भ स्वामी अग्निवेश जी, अध्यक्ष-बंधुआ मुक्ति मोर्चा, के कर कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मेडिकेयर अस्पताल के डाक्टरों-डा. सोनिया, डा. मनोज व डा. अजय की टीम द्वारा फिजियोथेरोपी व सामान्य चिकित्सा जांच व निःशुल्क दवा वितरण भी किया गया। क्षेत्र के गावों के सैकड़ों लोगों ने स्वास्थ्य जांच कराकर शिविर का लाभ उठाया।

इस शिविर को सफल बनाने में बंधुआ मुक्ति मोर्चा व दलित जन विकास संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं-अश्वनी कुमार, हंसराज आर्य व सत्यदेव आर्य का विशेष सराहनीय योगदान रहा।

हंसराज आर्य
दलित जन विकास संगठन
छमदमा, गुड़गांव

अश्वनी कुमार
बंधुआ मुक्ति मोर्चा
गुड़गांव

आर्य समाज, बाँकनेर, खैर (अलीगढ़) का वेद प्रचार सप्ताह 6 से 12 सितम्बर, 2014 तक सम्पन्न

आर्य समाज बाँकनेर, खैर (अलीगढ़) में वेद प्रचार कार्यक्रम 6 से 12 सितम्बर, 2014 तक हवलदार पं. ओम प्रकाश शर्मा के दिशा निर्देशन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

यह कार्यक्रम मुख्य रूप से आचार्या कु. सविता आर्या के प्रवचनों और श्री बच्चू सिंह आर्य के भजनों पर आधारित रहा। दिनांक 9 सितम्बर को स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती मुख्य प्रवक्ता रहे। जिन्होंने अपने व्याख्यान में मुख्य रूप से ग्रामीण जनता में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, असामाजिक गतिविधियों और युवा पीढ़ी में बढ़ रहे अनैतिक व्यवहार पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि इन्हें रोकने के लिए ग्रामों में वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार की अति आवश्यकता है इसके लिए वेद प्रचार का कार्यक्रम एक स्थान पर न रखकर प्रतिदिन दूसरे स्थानों पर रखने चाहिए और वैदिक साहित्य को प्रत्येक परिवार में पहुँचाना चाहिए।

आचार्या कु. सविता आर्या ने अपने प्रवचनों में, नारी समाज में व्याप्त कुरीतियों, मूर्तिपूजा, अवैदिक कथाओं, गौ-रक्षा, सामाजिक एकता और राष्ट्र प्रेम पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के आयोजन में आर्य समाज के सभी सदस्यों का सहयोग सराहनीय व प्रशंसनीय रहा।

- चेतन देव, पुरोहित, आर्य समाज बाँकनेर, अलीगढ़ (उ. प्र.)

पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में योग साधना शिविर सम्पन्न

दिनांक 21 से 25 सितम्बर, 2014 तक योग साधना शिविर आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

शिविर की अवधि में प्रतिदिन प्रातः 5.30 से 6.30 बजे तक योग साधना, 6.30 से 9.00 बजे तक यज्ञ प्रवचन, 10.0 बजे से 12.00 दोपहर तक भजन-प्रवचन तथा अपरान्ह 3.00 बजे से 6.00 तक भजन प्रवचन के कार्यक्रम प्रतिदिन नियमित रूप से संचालित होते रहे।

दिनांक 22 सितम्बर को अपरान्ह 3.00 से 6.00 बजे तक ''योग साधना से संस्कारों में परिवर्तन'' विषय पर विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, व्यवस्थापक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने की। गोष्ठी में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने भाग लिया और अपने विचार प्रकट किये। गोष्ठी में उपस्थित संन्यासियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये और सभी वक्ताओं ने योग को संस्कारों के परिवर्तन में उपयोगी बताया।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने अध्यक्ष पद से सम्बोधित करते हुए कहा कि योग का मुख्य आशय जीवात्मा का परमात्मा से मिलन है। योग का शाब्दिक अर्थ जोड़ना है अतः जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ना, मिलाना या साक्षात्कार करना कहा जाता है।

योग दर्शन के सूत्र-2 के अनुसार योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। अर्थात् चित्त की वृत्तियों को बाह्य जगत् से हटाकर हृदय में विराजमान् आत्मा (परमात्मा) से जोड़ना है। जिसके लिए योग के आठ अंगों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि) का क्रमशः पालन करना अति आवश्यक है। इसके उपरान्त ही 'तुरीय' अवस्था में साधक का साक्षात्कार परमात्मा से होता है। बिना यम और नियमों के पालन के योग आसनों से योग साधना में कोई लाभ नहीं होता।

यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान) के पालन से ही संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है। आसन का तात्पर्य उस सुखासन से है जिसमें साधक सुख पूर्वक निश्चित समय तक बैठकर साधना कर सके। वर्तमान में यौगिक आसनों के कराने का प्रचलन चल पड़ा है वे मात्र व्यायाम आसन है जिनसे शारीरिक कष्टों का निवारण सम्भव है परन्तु योग साधना सम्भव नहीं। ये आसन प्रत्येक मनुष्य को लाभकारी नहीं होते। इनका प्रशिक्षण योग चिकित्सक से ही प्राप्त करने पर लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

स्वामी जी ने कहा कि योग साधना के लिए वैराग्य आवश्यक है। जगत में आसक्त व्यक्ति का मन योग अंगों (पादों) में स्थिर होना सम्भव नहीं है।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने यम, नियम और आसनों की विस्तार से व्याख्या की और कहा कि मैं अपने योग शिविरों में यम-नियम के पालन पर विशेष जोर देता हूँ जिससे कई व्यक्तियों के संस्कारों में परिवर्तन देखा गया है।

स्वामी जी ने गोष्ठी में भाग लेने वाले वक्ताओं का आभार व्यक्त किया और समय-समय पर ऐसी गोष्ठियों के आयोजन को साधकों हेतु आवश्यक बताया। श्रोताओं को शान्तिपूर्वक श्रवण करने के लिए धन्यवाद दिया।

शान्ति मन्त्र के सस्वर पाठ के बाद गोष्ठी समाप्त हुई।

- मुकेश मेधार्थी, गोष्ठी संयोजक

वैदिक योग साधक सम्मानित

जयपुर : रविवार 14 सितम्बर, 2014 को राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद् की ओर से 41वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। योग साधना केन्द्रों के श्रेष्ठ साधकों, साधिकाओं और योग परिवारों को राज्य के समाज कल्याण मंत्री अरुण चतुर्वेदी ने सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक योग साधक, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल कर रहे थे। यशपाल 'यश' ने कहा कि योग जीवन मरण से मुक्ति का मार्ग है। विशेष आमंत्रित स्वामी प्रज्ञानानन्द ने योग को जीवन में ढालने की सलाह दी।

आरम्भ में योग परिषद् के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र छावड़ा ने सभी का स्वागत किया तथा सचिव हरिचरण सिंहल ने परिषद् की गतिविधियों से परिचित कराया।

- प्र. ईश्वर दयाल माथुर

प्राचार्य/शिक्षकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर, जिला जालन्धर (पंजाब) में संस्कृत व्याकरण, वेद एवं दर्शन के अध्यापन हेतु आवासीय शिक्षकों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित हैं। ऐसे व्यक्ति जो विद्यार्थियों के लिए जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर प्रेरणा दे सकें तथा ब्रह्मचारियों के व्यक्तित्व निर्माण में रुचि रखते हों को अधिमान दिया जायेगा। प्रार्थी अपने शैक्षिक विवरण के साथ अपना मोबाईल नम्बर भी लिखकर भेजे। मानदेय योग्यता अनुरूप तथा आवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क होगी।

- ध्रुव कुमार मित्तल, श्री गुरु विरजानन्द महाविद्यालय, करतारपुर, जिला-जालन्धर (पंजाब)-144801

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

thearyasamaj.org

NDPSo on 03/04 अक्टूबर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 2 अक्टूबर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 02 से 08 अक्टूबर 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्यां रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारँ सुविद्वांसो वितेनिरे।।

—यजु० १७/६८, अथर्व

ऋषिः—भृगुः।। देवता—आज्यम्ः।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार-कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े-बड़े स्वार्थ-त्याग तक करते हैं,पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है; व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीज़ों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर-ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय-प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

शब्दार्थ—ये=जो सुविद्वांसः=उत्तम ज्ञानी महापुरुष विश्वतोधारं यज्ञम्=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को वितेनिरे=विस्तृत करते हैं वे स्वः यन्तः=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए न अपेक्षन्त=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, रोदसी=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर द्याम्=द्युलोक में आरोहन्ति=चढ़ जाते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.
पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलारपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च के 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।